Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, AUG-SEPT, 2020, VOL- 8/41

भारत में वैकल्पिक शिक्षा: इतिहास एवं विकास

आलोक कृष्ण द्विवेदी
पी-एच. डी. शोधार्थी (शिक्षा विद्यापीठ), महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्विद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र,
ईमेल- anmol.alok81@gmail.com

Abstract

प्रस्तुत लेख में भारत में वैकल्पिक शिक्षा के इतिहास एवं इसके विकास के बारे में बताया गया है। भारत के दार्शनिकों तथा शिक्षाविदों तथा सामाजिक सुधारकों जिसमें स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद सरस्वती, महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, सर सैयद अहमद खान महात्मा गाँधी, रविंद्रनाथ टैगोर, श्री अरबिंदो, जे. कृष्णमूर्ति ने समकालीन शिक्षा के विकल्पों का पता लगाना शुरू किया जिसे वैकल्पिक शिक्षा कहा जाता है तथा इन लोगों के द्वारा शुरू किये गए विद्यालयों को वैकल्पिक विद्यालय कहा जाता है।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at *www.srjis.com*

प्रस्तावना-

शिक्षा व्यक्ति के आंतरिक संभावनाओं को प्रकट करने के साथ उसे अपने आसपास के परिस्थितियों पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए सक्षम बनाती है। शिक्षा की औपचारिक एवं अनौपचारिक प्रकृति समय एवं स्थान के संदर्भ में व्यवहारिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों पक्ष को धारण करती है। समाज की हर पीढ़ी की जिम्मेदारी होती है कि वह अपने पूर्व पीढ़ी से प्राप्त अनुभव एवं ज्ञान की संपदा को अपने आने वाली पीढ़ी में सहज एवं संतुलित ढंग से हस्तांतरित करें। शिक्षा की प्रकृति को लेकर शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यक्रम के संदर्भ में दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, मनोसामाजिक, एवं राजनैतिक दृष्टि से विमर्श होते रहे हैं। इसी विमर्श से शिक्षा की परंपरागत पद्धति के इतर वैकल्पिक पद्धति का विकास हुआ। "इक्कीसवीं सदी के शुरुआत के साथ वैकल्पित विद्यालयों में विकसित कई शिक्षण पद्धतियों जैसे कि छात्र केन्द्रित और स्वतंत्र शिक्षण परियोजना आधारित सहकारी अधिगम के साथ –साथ सार्वजानिक शिक्षा को प्रभावित किया"(केबल एट आल, 2009)। राज्य एक तरफ जहां बड़े स्तर पर समेकित रूप में परंपरागत शैक्षिक पद्धति को लागू किया वहीं व्यक्तिगत आधार पर वैकल्पिक चुनाव का आश्रय लेते हुए देश एवं दुनिया में अनेक लोगों ने अपनी अंतर्दृष्टि का प्रयोग करते हुए वैकल्पिक शिक्षा पद्धति का विकास किया। वैकल्पिक क्षेत्र में काम करने वाले लोगों का अपना व्यक्तिगत प्रयास रहा और वे अपने क्षेत्र में नयी संभावनाओं को खोजने में सफल भी हुयें। आज प्रशिक्षण पद्धति जिसे 'पारंपरिक शिक्षा प्रणाली' कहा जाता है, एक समान शिक्षक है जो पुस्तक से जुड़ी है और एक दंडात्मक पुरस्कार प्रणाली के रूप में है। इससे पारंपरिक शिक्षा की आलोचना हुई है और शिक्षा में वैकल्पिक दृष्टिकोणों का उदय हुआ है। 'वैकल्पिक शिक्षा दृष्टिकोण' को नए शैक्षिक दृष्टिकोण कहा जाता है। इन शैक्षिक दृष्टिकोणों की स्थानिक व्यवस्था सबसे अधिक ध्यान देने योग्य बिंदु हैं (तुर्क एंड सारी, 2017)। बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में दुनिया भर के बच्चों को सर्वश्रेष्ठ शिक्षा प्रदान करने के लिए एक आनुपातिक शैक्षिक अनुसंधान और प्रयोग किया गया है। वर्तमान समस्या को दूर करने के लिए कई नई नीतियों और प्रथाओं का अभ्यास किया जा रहा है। लेकिन फिर भी कई सवाल हैं जो अनुत्तरित हैं और इस प्रकार ये शैक्षिक अनुसंधान के लिए नए दृष्टिकोण दे रहे हैं (थारकन, 2016)। अमेरिका के शैक्षिक इतिहास के अनुसार यह उच्च जवाबदेही के कारण शैक्षिक क्षेत्र में बहुत अधिक सुदृढ़ता दिखाता है। कई प्रथाओं का पालन किया जाता है ताकि बच्चे अपनी शैक्षिक क्षमता तक पहुंच सकें (सलामी एंड न्वेके, 2012)। हालांकि शत प्रतिशत सत्य के सार्वभौमिकता को वे लोग नहीं पायें पर उनका अपना दृष्टिकोण बहुत सन्दर्भ में व्यावहारिक रहा। वैकल्पिक शिक्षा की परिभाषा देते हुए रेविड कहते हैं कि "वैकल्पिक शिक्षा

एक अत्याधुनिक शैक्षिक सुधार है,भले ही वे दशकों तक शैक्षिक क्षेत्र में रहे हों (रेविड, 1994)। उनके शब्दों में, स्कूल पुनर्गठन की सभी मौजूदा बातों के बीच, वैकल्पिक हमारे पास सबसे स्पष्ट उदाहरण है जो एक पुनर्गठित विद्यालय जैसा दिख सकता है। वे प्रोग्रामेटिक, संगठनात्मक और व्यवहार संबंधी नियमितताओं से हमारे सबसे निश्चित प्रस्थान का प्रतिनिधित्व करते हैं जो स्कूल सुधार को रोकते हैं (बर्र एंड पैरेट, 2001)। वही कई सुधारों के बावजूद कुछ छात्र अभिभावकों, शिक्षकों की विकास की संभावनाएं अवरुद्ध है उसी को ध्यान में रखते हुए वैकल्पिक शिक्षा का विकास किया गया है। वैकल्पिक शिक्षा के अंतर्गत स्कूल विदाउट वाल ,स्कुल विदीन स्कूल,फंडामेंटल स्कूल ,मैगनेट स्कूल एवं लर्निग सेंटर प्रमुख हैं ।

वैकल्पिक शिक्षा वास्तव में छात्र केंद्रीत शिक्षा के दर्शन की बात करती है। समाज में एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में मनोवैज्ञानिक एवं शारीरिक भिन्नता पाई जाती है। ऐसे में इसकी समस्याएं भी भिन्न-भिन्न होती है। परंपरागत विद्यालयी शिक्षा छात्र केंद्रित न होकर समाज एवं राष्ट्र केंद्रित होती है। इस शिक्षा में व्यक्ति गौण बन जाता है। व्यक्ति के संपूर्ण संभावनाओं का विकास करने में परम्परागत शिक्षा अक्षम होती है। वैकल्पिक विद्यालय प्रणाली ऐसी प्रणाली है जो परंपरागत शिक्षा प्रणाली से शिक्षा प्राप्त करने में असफल होते हैं उनके लिए यह शिक्षा का प्रबंधन करती है। समाज में ऐसे बहुत से बच्चे पाए जाते हैं जो मानसिक एवं शारीरिक रूप से परंपरागत शिक्षा प्रणाली के द्वारा शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ होते हैं । उनकी असमर्थता इस बात के तरफ वैकल्पिक मार्ग प्रशस्त करती है कि वे समाज के मुख्यधारा में आने के लिए समाज द्वारा कुछ ऐसे उपबंध किए जाए जिससे बच्चों के अधिगम विकास में रचनात्मक परिवर्तन हो सके । वैकल्पित शिक्षा के अंतर्गत स्वतंत्रता प्रमुख पक्ष है । शिक्षक –छात्र के अंतर्गत इसे प्रमुख स्थान दिया जाता है । सच तो यह है कि "बुनियादी बातों को ध्यान में रखते हुए वैकल्पिक शिक्षा शिक्षक- छात्र के स्वतंत्रता को प्रमुख स्थान देती है"(रेविड ,1981)। दुनिया भर में हम विभिन्न दर्शनों में निहित शिक्षा के वैकल्पिक रूपों की एक विस्तृत श्रृंखला पाते हैं। इस प्रकार, वैकल्पिक शिक्षा का परिदृश्य अत्यधिक खंडित है जिससे वैकल्पिक स्कूलों और कार्यक्रमों में छात्रों की संख्या निर्धारित करना मुश्किल हो जाता है। मॉन्टेसरी और वाल्डोर्फ और स्टेनर शिक्षाशास्त्र जैसे विशेष शैक्षिक अवधारणाओं के आधार पर वैकल्पिक स्कूलों के बड़े, वैश्विक नेटवर्क, वैकल्पिक स्कूली शिक्षा के साथ-साथ व्यक्तिगत वैकल्पिक स्कूलों में कुछ नए आंदोलनों के साथ मौजूद हैं। इसके अलावा कई ओईसीडी (OECD) स्कूल सिस्टम ने कानून बनाया है जो पब्लिक स्कूल सिस्टम के लिए वैकल्पिक स्कूलों और शिक्षा कार्यक्रमों के लिए जगह और फंड बनाता है (रॉफ्स एंड स्टूलबर्ग, 2004)।

भारत में वैकल्पिक शिक्षा का इतिहास-

भारत में वैकल्पिक विद्यालयों का लंबा इतिहास है। आजादी के बाद के वर्षों में सरकार ने विद्यालय नेटवर्क के विस्तार पर ध्यान केंद्रित किया है साथ ही शैक्षणिक जरूरतों के अनुसार पाठ्यचर्या की रूपरेखा, स्थानीय भाषा निर्देश के माध्यम के रूप में शिक्षा जैसी संकल्पनाओं पर भी कार्य किया है। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक कई सामाजिक सुधारकों ने समकालीन शिक्षा के विकल्पों का पता लगाना शुरू किया। स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद सरस्वती, महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, सर सैयद अहमद खान उन अग्रणी विभूतियों में से थे जिन्होंने सामाजिक पुनर्जन्म का बीड़ा उठाया, सामाजिक असमानताओं को दूर किया और वैकल्पिक विद्यालयों के माध्यम से बालिकाओं की शिक्षा को बढ़ावा दिया। बीसवीं शताब्दी के आरंभ में शिक्षाविद् वैकल्पिक विद्यालयों के मॉडल प्रस्तुत किए जो मुख्यधारा के विद्यालयों की सीमाओं के सामने भी व्यवहार्य हैं। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर का शांति निकेतन, जिद्दू कृष्णमूर्ति का ऋषि घाटी विद्यालय, श्री अरबिंदो और मदर का श्री अरबिंदो इंटरनेशनल सेंटर फॉर एजुकेशन जिन्हें आश्रम विद्यालयों के नाम से जाना जाता है और वाल्डन पाथ मैग्नेट विद्यालय वैकल्पिक शिक्षा के कुछ उदाहरण हैं (अहमद, 2016)। वैकल्पिक विद्यालयों में एक उछाल 1970 के बाद में देखा गया था। लेकिन अधिकांश वैकल्पिक विद्यालय सरकार के बजाय व्यक्तिगत

प्रयासों का परिणाम हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 1989 में राष्ट्रीय संस्थान ओपन स्कूलिंग (एनआईओएस) की स्थापना सरकार द्वारा उठाए गए कदमों में से एक है जिसने अपने तहत ऐसे सभी विद्यालयों को लिया था। एनआईओएस वैकल्पिक विद्यालय के बच्चों को सरकारी निर्धारित परीक्षा लेने के लिए मंच प्रदान करता है। बीसवीं सदी की पहली छमाही में महत्वपूर्ण शिक्षाविदों में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी, जिद्दु कृष्णमूर्ति, श्री अरबिंदो और मदर शामिल थे। 1920 के दशक और 1930 के दशक तक, इन दिग्गजों ने वैकल्पिक शिक्षा के कई व्यवहार्य मॉडलों का निर्माण किया, मुख्यधारा की शिक्षा के सिद्धांतों के एक विचार के रूप में। इन विचारों में से कुछ राष्ट्रीय स्वतंत्रता के संघर्ष और भारतीय समाज के पुनरोद्धार के साथ-साथ गठबंधन में थे। 'विकल्प' ने नैतिक प्रतिबद्धताओं तथा विद्यालय और समाज के बीच पारस्परिक संबंध पर जोर दिया । वर्ष 1863 में महर्षि देबेन्द्रनाथ के पुत्र, रवीन्द्रनाथ इस देश की सबसे ताकतवर साहित्यिक शक्तियों में से एक बन गए। हालांकि, टैगोर अकेले इस देश पर अपने कविताओं और साहित्यिक प्रभावों से संतुष्ट नहीं थे। वे गंभीरता से भारत के लोगों के लिए गुणवत्ता की शिक्षा का पोषण करना चाहते थे। इस महान उद्देश्य के लिए, उन्होंने सन् 1901 में एक विद्यालय खोलने का फैसला किया। उन्होंने शांतिनिकेतन में एक विद्यालय खोल दिया और इसे ब्रह्मचारी आश्रम कहा। उन्होंने शिक्षा शब्द को पूरी तरह से नया अर्थ दिया। इस विद्यालय का उद्देश्य नई पश्चिमी और पारंपरिक पूर्वी शिक्षा व्यवस्था को मिला देना था। उनका मानना था कि बालक का मस्तिष्क उनके चारों ओर की दुनिया के प्रभावों के प्रति बेहद संवेदनशील होता है । बच्चों के मस्तिष्क हमेंशा कुछ सीखने की क्रिया में लगा रहता है और उन्हें वास्तव में जानने में आनंद मिलता है। उनका मानना था कि बच्चों का मस्तिष्क पूरी तरह से मुक्त होता है और इसलिए उन्हें ज्ञान के साथ जोड़ना आसान होता है जिसके परिणामस्वरूप वे अपने जीवन में अधिक ऊंचाई हासिल कर सकें। उनका मानना था कि बच्चों को पर्याप्त स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए जोकि स्वयं का एक शैक्षिक मूल्य है। इसलिए उन्होंने एक ऐसे विद्यालय की स्थापना की, जहां विद्यालयी परिवेश में होने के बावजूद विद्यार्थी स्वतंत्र होंगे। इस विद्यालय के विद्यार्थियों की रूचि के विषयों के चयन की स्वतंत्रता प्रदान की गई है साथ ही व्यावसायिक शिक्षा पर भी जोर दिया गया था। इसके लिए विद्यार्थियों को विद्यालयी जीवन के बाहर जीवनयापन करने के योग्य तैयार किया जाता है। गुरुदेव स्वयं ही विद्यालय को चहारदीवारी जैसी संकल्पना से बाहर निकाला था क्योंकि उन्होंने चाहरदीवारों के बाड़े में स्वयं को क्लौस्ट्रफोबिक जैसी समस्या से घिरा महसूस किया था। उन्होंने पाया कि उनके मस्तिष्क इन चहारदीवारियों के मध्य में फंस गया है। शांतिनिकेतन आश्रम उस युग में एक ऐसे देश की शिक्षा के क्षेत्र में एक नवीन रास्ता था, जो धीरे-धीरे बंद वर्गों की शिक्षा के उस यूरोपीय माध्यम में उतर रहा था, जहां ज्ञान केवल कक्षाओं में अनुदेशन और परीक्षा उन्मुख था (कयूम, 2016)। सन् 1921 में, उन्होंने इस छोटे विद्यालय को विश्वविद्यालय में परिवर्तित कर दिया और इसे विश्व भारती कहा। जिसका शाब्दिक अर्थ 'जहां दुनिया घोंसले में एक घर बनाती है'। यहाँ शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को उनके जीवन की वास्तविक परिस्थितियों के अनुकूलन हेतु तैयार करना है, शांति निकेतन शिक्षा में विद्यार्थियों के अनुकूलन पर विशेष जोर देता है, यहाँ की शिक्षण पद्धति शिक्षार्थी केंद्रित है, इसके लिए रचनात्मक और स्वतंत्र सोच को विकसित करने और तीन भाषा सूत्र को अपनाने पर बल्दिया जात है । आज के तकनीकी युग ने हमें प्रौद्योगिकी के माध्यम से प्रौद्योगिकी और प्रौद्योगिकी के माध्यम से पढ़ाने के लिए प्रेरित किया है ताकि सफलतापूर्वक कक्षाओं को पूरा करने के बाद उनमें जीवनोपयोगी कौशलों का विकास किया जा सके। कक्षाओं में बच्चे को सिखाना नहीं है कि बल्कि ऐसा परिवेश निर्मित करना है जहाँ वे स्वयं अपनी समझ विकसित कर सकें, उसे लागू कर सकें साथ ही मूल्यांकन करने में दक्ष हो सकें। इस विश्वविद्यालय में मानविकी, विज्ञान और विभिन्न ज्ञानानुशासन के पाठ्यक्रम संचालित किए जाते है जहाँ विद्यार्थी अपनी रूचि के अनुसार विषय चं करने के लिए स्वतंत्र होता है। इस विश्वविद्यालय के कला महाविद्यालय, कला भवन को दुनिया के सबसे अच्छे कला महाविद्यालयों में से एक माना जाता है। टैगोर का मानना था कि, "कला में, मनुष्य स्वयं को प्रकट

करता है।" विश्व भारती हमारी सांस्कृतिक विरासत का एक सच्चा प्रतिबिंब है जहाँ शिक्षा के सही अर्थों को परिभाषित करते हुए विद्यार्थियों को समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति के अनुसार विकसित होने का अवसर प्रदानं किया जाता है । गुरुदेव टैगोर ने प्रचलित शिक्षा-प्रणाली में अपना स्वयं का शैक्षिक विकल्प स्थापित किया। यहाँ की कक्षाएं प्रकृति की गोद में हैं और अभी भी विश्व भारती कला और सौंदर्यशास्त्र, रचनात्मक गतिविधियों और स्थानीय के साथ ही विश्व संस्कृतियों के बारे में जागरूकता के लिए उत्कृष्टता का केंद्र बना हुआ है। (कौल,2001)

गांधी के विचारों तथा टैगोर की शिक्षा के संदर्भ में शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा और परीक्षा उन्मुख किताबों की शिक्षा का विरोध शामिल था। उन्होंने विद्यालयों की एक श्रृंखला के माध्यम से अपने दृष्टिकोण को प्रचारित करने के लिए सबसे पहले दक्षिण अफ्रीका में फीनिक्स फार्म और टॉल्स्टॉय फार्म में क्रियान्वित करना आरंभ किया इसके पश्चात चंपारण, साबरमती, वर्धा सहित भारत के कई अन्य हिस्सों में स्थापित विद्यालयों में जारी रखा। गांधी जी ने वर्धा में बेसिक शिक्षा या नई तालीम की नींव रखी जिसके पाठ्यक्रम में पूरे दिन की शिक्षण समय-सारणी के कुछ घंटे शैक्षणिक गतिविधियों के लिए तथा शेष समय शिल्प कार्य, कृषि, खाना पकाने, सफाई और अन्य क्रियाकलापों के लिए निर्धारित किए गए थे। आनंद निकेतन (नई तालीम विद्यालय) जुलाई, 2005 में पुन: इस दृढ़ विश्वास के साथ सेवाग्राम में प्रारम्भ किया कि शिक्षा के बारे में गांधीजी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जैसे वे 75 साल पहले थे। वास्तव में बापू के शैक्षिक विचार वर्तमान के भौतिक विकास तथा आधुनिक संदर्भ की चुनौतियों के निदान एवं उनके उपचार पर केन्द्रित हैं। आनंद निकेतन विद्यालय में शिक्षा का लक्ष्य एक बच्चे का समग्र विकास करना है। यहाँ की शिक्षा का एक अन्य उद्देश्य बालक को एक जिम्मेदार नागरिकता के रूप में विकसित करना है जिसके लिए बालक की बुद्धि, नम्रता और उसके जीवन के सभी पक्षों के विकास के साथ-साथ धरती माँ के लिए सम्मान उत्पन्न करना महत्वपूर्ण माना जाता है। चूंकि शिक्षा जीवन के लिए तैयार हो रही है, इसलिए सीखने की प्रक्रिया को जीवन के साथ एकीकृत करना चाहिए। वर्तमान समय में मुख्यधारा की शैक्षणिक व्यवस्था मुख्य रूप से बालक को सीखने के लिए प्रोत्साहित करती है। इतना ही नहीं, वर्तमान शैक्षिक प्रणाली बच्चे की मूल प्रकृति के प्रति भी असंवेदनशील है। इसलिए इस मुद्दे पर को सुलझाने की तत्काल आवश्यकता है। दुनिया भर में तेजी से बढ़ती उपभोक्तावादी संस्कृति से कई समस्याएं पैदा हो रही हैं। शिक्षा द्वारा बौद्धिक दुनिया और शारीरिक श्रम की दुनिया के मध्य व्यापक आर्थिक-सामाजिक अंतर को कम किया जाना चाहिए और अंत में समाप्त कर देना चाहिए। शिक्षा के माध्यम से इस छोर की ओर एक प्रयास मानवीय मूल्य-आधारित और तर्कसंगत-विश्लेषणात्मक मानसिकता के विकास के साथ-साथ, दोनों के उचित एकीकरण हो सकता है। महात्मा गांधी मानते थे कि देश के प्रत्येक नागरिक को बुनियादी शिक्षा (Basic Education) प्राप्त करनी चाहिए। गांधी जी द्वारा दिया गया यह कथन वैकल्पिक शिक्षा की ओर ही इशारा करता है(साइक्स, 1988)। जे. कृष्णमूर्ति ने भी पूरे जीवन के संबंध में शिक्षा के बारे जो विचार दिए उनमें मानवीय मूल्यों को प्रमुख स्थान दिया जिससे मनुष्य-मनुष्य के बीच अलगाव न बढ़े। उन्होंने मानव जीवन के संबंध में सीखने की प्रक्रिया को बारीकी से समझा और इसी के आधार पर 1930 के दशक वैकल्पिक शिक्षा पद्धति पर आधारित उत्तर प्रदेश के वाराणसी में राजघाट बसंत विद्यालय तथा आंध्र प्रदेश में ऋषि वैली विद्यालय स्थापित किए। वाराणसी में राजघाट बेसेंट विद्यालय (या आरबीएस) कृष्णमूर्ति फाउंडेशन का दूसरा सबसे पुराना विद्यालय है (कृष्णमूर्ति, 2001)। 1934 में जे. कृष्णमूर्ति द्वारा स्थापित यह विद्यालय भारत के प्रतिष्ठित आवासीय-सह-दिवसीय विद्यालयों में से एक है। इसका नाम डॉ. एनीबेसेंट के नाम पर पड़ा और यह गंगा नदी के किनारे काशी रेलवे स्टेशन के पास स्थित है। यह विद्यालय कृष्णमूर्ति फाउंडेशन द्वारा संचालित किया जा रहा है। कृष्णमूर्ति फाउंडेशन को सन् 1928 में जे. कृष्णमूर्ति और डॉ. एनीबेसेंट महोदया ने एक धर्मार्थ संस्थान के रूप में स्थापित किया था। राजघाट बेसेंट विद्यालय एक आवासीय, सह-शिक्षा तथा अंग्रेजी माध्यम का विद्यालय है

जोकि केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली से संबद्ध है। विद्यालय 400 एकड़ के विशाल परिसर में स्थित है जोकि वरुण नदी के दोनों किनारों पर फैला है। राजघाट शिक्षा केंद्र की राजघाट बसंत विद्यालय (आरबीएस), वसंत कॉलेज ऑफ गर्ल्स, वसंत सांध्य कॉलेज और कृष्णमूर्ति स्टडी सेंटर जैसी कई इकाइयां हैं। रिट्रीट वरुणा के ग्रामीण केंद्र में संजीवन अस्पताल, एक मुफ़्त प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, आसपास के गांवों के विद्यार्थियों के लिए ग्रामीण प्राथमिक विद्यालय, एक डेयरी और कृषि योग्य भूमि है। राजघाट विद्यालय अपनी पढ़ाई के आनंदमय और तनाव मुक्त वातावरण के लिए जाना जाता है। दशकों से कृष्णमूर्ति फाउंडेशन ऑफ इंडिया (केएफआई) ने सार्थक शिक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को जीवित रखा है और चेन्नई, उत्तरकाशी, बैंगलोर और पुणे में अपने विद्यालयों को खोल कर शिक्षा का विस्तार किया है (हर्जबर्गर, 2004)।
श्री अरबिंदो और मदर ने 'अभिन्न शिक्षा' के विचार का उद्‌घाटन किया जिसमें बढ़ते बच्चे के जीवन के भौतिक, मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक जैसे सभी आयामों को सम्मिलित किया गया। मदर ने 1930 के दशक में पांडिचेरी (वर्तमान में पुद्‌दुचेरी) में बच्चों के साथ कार्य करते हुए 'मुफ्त प्रगति' का अभ्यास किया । श्री अरबिंदो इंटरनेशनल सेंटर ऑफ एजुकेशन श्री अरबिंदो आश्रम का अभिन्न अंग है जोकि शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग और अनुसंधान के रूप में कार्य कर रहा है। श्री अरबिंदो ने एक दिव्य चेतना और दिव्य जीवन को पृथ्वी पर प्रकट करने के लिए और भविष्य की मानवता को तैयार करने के सर्वोत्तम साधनों में से शिक्षा को एक महत्वपूर्ण आयाम माना है। अपने शैक्षिक दृष्टिकोण को एक धरातलीय आधार देने के लिए मदर ने 2 दिसंबर, 1943 को बच्चों के लिए एक विद्यालय खोला। तब से इस विद्यालय में विभिन्न शैक्षणिक समस्याओं और मुद्दों पर प्रयोग जारी हैं। सन् 1951 में पांडिचेरी (वर्तमान में पुद्‌दुचेरी) में एक सम्मेलन आयोजित किया गया जिसने श्री अरबिंदो ने शहर में एक अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय केंद्र स्थापित करने का संकल्प किया। तदनुसार श्री अरबिंदो इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी सेंटर का उद्‌घाटन 6 जनवरी, 1952 को मदर ने किया। 1959 में मदर ने श्री अरबिंदो इंटरनेशनल सेंटर ऑफ एजुकेशन का नाम बदलने का फैसला किया। यह शिक्षा केंद्र प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर कॉलेज स्तर तक शिक्षा प्रदान करता है। इसमें मानविकी, विज्ञान, भाषाएं, इंजीनियरिंग, शारीरिक शिक्षा, आरेखण, चित्रकला, हस्तकला, संगीत और नृत्य (भारतीय और पश्चिमी), नाटककला, कला तथा शिल्प सीखने के लिए सुविधाएं उपलब्ध हैं । यह केंद्र दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करने में विश्वास करता है जोकि सभी के लिए सुलभ हो। इस विद्यालय का आधार इस बात में निहित है कि कि बालक सांस्कृतिक संश्लेषण में व्यावहारिक और ठोस रुचि पैदा हो जिससे वह प्रत्येक राष्ट्र की अपनी विशिष्ट संस्कृति के संरक्षण में अपना योगदान दे सके। केंद्र श्री अरबिंदो इंटरनेशनल सेंटर ऑफ एजुकेशन के बुलेटिन नामक एक एक त्रैमासिक जर्नल भी प्रकाशित करता है । इसमें श्री अरबिंदो और मदर्स की वार्ता एवं आश्रम की गतिविधियों के साथ-साथ शिक्षा केंद्र की विभिन्न गतिविधियों को इस त्रैमासिक रिपोर्ट में शामिल किया जाता है (द मदर, 1990)।

उपसंहार-

भारत में वैसे तो वैकल्पिक शिक्षा का इतिहास हज़ारों साल पुराना है, जब गुरुकुलों में गुरुजन विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करते थे और यहां पर विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ मुफ्त खान-पान, रहने की व्यवस्था होती थी। किसी भी विद्यार्थियों में हो रहे विकास का आंकलन गुरुजन उस विद्यार्थियों की सृजनात्मकता और व्यक्तित्व विकास के आधार पर करते थे। इसी के तर्ज पर वर्तमान में भी भारत में विभिन्न प्रकार के वैकल्पिक विद्यालय चलाए जा रहे हैं।

संदर्भ सूची-

केबल, के. ई., प्लकर, जे. ए. & स्प्राडलीन, टी. ई. (2009). आल्टरनेटिव स्कूल्स : व्हाट्स इन अ नेम? एजुकेशन पॉलिसी ब्रीफ़. सेंटर फॉर इवैल्यूएशन एंड एजुकेशन पॉलिसी, 7 (4), 1-12.

तुर्क, एस. ए. & सरी, आर. एम. (2017). अल्टरनेटिव एजुकेशन अप्प्रोचेस एंड देयर एफ़ेक्ट्स ऑन दी लर्निंग स्पेस. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेटिव रिसर्च इन एजुकेशन, 4 (4), 202-214.

थारकन, एल. ए. (2016). दी हिस्ट्री ऑफ अल्टरनेटिव एजुकेशन इन इंडिया-ए ब्रीफ़ स्टडी. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमन रिसोर्स रिसर्च रिव्यू, 4 (3), 1-7.

सलामी, आई. ए. & न्वेके, जी. सी. (2012). अल्टरनेटिव प्राइमरी एंड सेकंडरी एजुकेशन एंड इट्स इंफ्लुएंस ऑन एक्सैस टू यूनिवर्सिटी एजुकेशन एंड सेल्फ-एफीकेसी ऑफ अंडरग्रेजुएट स्टूडेंट्स इन नाईजीरिया. अ पेपर प्रेजेंटेड एट दी ओपेन सोसाइटी फ़ाउंडेशंस(ओएसएफ) एंड दी प्राइवटाईजेशन इन एजुकेशन रिसर्च इनिशिएटिव (पीईआरआई) एन अफ्रीका रीजनल कॉन्फ्रेंस ऑन : ग्लोबलाइज़ेशन, रीजनलाइजेशन एंड प्राइवटाईजेशन इन एंड ऑफ एजुकेशन, जोहांसबर्ग, साउथ अफ्रीका.

रेविड, एम. ए. (1994). अल्टरनेटिव स्कूल्स : दी स्टेट ऑफ दी आर्ट. एजुकेशनल लीडरशीप, 52 (1), 26-31.

बर्र, आर. डी. & पैरेट, डबल्यू. एच. (2001). होप फूलफिल्ड फॉर एट-रिस्क एंड वायलेंट यूथ : के-12 प्रोग्राम्स दैट वर्क. एलिन एंड बैकन, ब्लूमिंग्टन, इन : नेशनल एजुकेशन सर्विस.

रेविड, एम. ए. (1981). दी फ़र्स्ट डेकेड ऑफ पब्लिक स्कूल आल्टरनेटिव्स. फ़ाई डेल्टा कप्पन, 62, 551-553.

रॉफ्स, ई. & स्टुलबर्ग, एल. एम. (2004). दी एमेनसीपैट्री प्रोमाईस ऑफ चार्टर स्कूल्स, स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क. एलबैनी.

अहमद, एफ. (2016). देश ये मेरा : पारंपरिक शिक्षा का आधुनिक विकल्प : वैकल्पिक शिक्षा. सांची बौद्ध ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय : भोपाल.

कय्यूम, एम. (2016). एजुकेशन फॉर टूमारो : दी विजन ऑफ रवीन्द्रनाथ टैगोर. एशियन स्टडीज रीव्यू, 40 (3), 1-16.

कौल, आर. (2001). एक्सेसिंग प्राइमरी एजुकेशन-गोइंग बियॉन्ड दी क्लासरूम इन इंडिया. इकोनोमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 36 (2), 155-62.

कृष्णमूर्ति, जे. (2001). ए टाइमलेस स्प्रिंग : कृष्णमूर्ति एट राजघाट (रीप्रिंट). चेन्नई : कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया.

हर्जबर्गर, आर. (2004). कृष्णमूर्ति ऑन एजुकेशन, राजपूत, जे. एस. (सं.) इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन एजुकेशन वॉल्यूम 1 , नई दिल्ली : एन.सी.ई.आर.टी.

दी मदर. (1990). एजुकेशन पार्ट 1, 2, 3. पोंडिचेरी : श्री अरबिंदो आश्रम.